

② द्विगु समास- 'दूसरा पद प्रधान'

इस समास का प्रथम पद संख्यावाची होता है और सम्पूर्ण पद मिलकर किसी न किसी समूह का बोध करता है-

जैसे- एकांकी- एक अंक (दृश्य) का नाटक
 द्विवेदी- दो वेदों का ज्ञान।

- दुनाली - दो नाल वाली, दुधारी - दो धार वाली
 त्रिवेदी - तीन वेदों का शाखा, तिराहा - तीन राहों का समाहार
 त्रिरंगा - तीन रंगों का समूह, त्रिफला - तीन फलों का मिश्रण
 त्रिकोना - तीन कोनों का समूह, त्रिकोण - तीन कोणों का समूह
 चौराहा - चार राहों का समूह, चवन्नी - चार आने का समूह
 चौखट - चार खूंटों का समूह, चौपाया - चार पैरों का समूह

- चौमासा- चार मासों का समूह, -चौकोर- चार कोरों का समूह
- चतुर्भुज- चार भुजाओं का समूह,
- पंचवली- पाँच वल्लवक्षों का समूह
- पंजाब- पाँच आबों (नदियों) का समूह
- पंचरंगा- पाँच रंगों का समाहार
- पंचामृत- पाँच अमृतों (दूध, दही, घी, शहद और शक्कर) का समूह

पंचानन- पाँच भाननों का समूह

षडानन- छह भाननों का समूह

षडतु- छह ऋतुओं का समूह

षड्राग- छह रागों का समूह

षण्मूर्ति- छह मूर्तियों का समूह

षण्मुख- छह मुखों का समूह

सप्ताह- सात दिनों का समूह.

अठन्नी- आठ भावों का समूह

- अठवारा - आठवें वार को भगने वाला बाजार
 नवरात्र - नौ विशेष शत्रियों का समूह
 नवग्रह - नौ ग्रहों का समूह
 नवरस - नौ रसों का समूह
 शताब्दी - सौ वर्षों का समूह
 सतसई - सात सौ दोहों का समूह
 विशेष - एक से लेकर दस और दस से भाज्य संख्याओं में
 द्विगु समास होता है।